राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार एवं गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में विगत दिनों वल्लभ संप्रदाय के विश्वविख्यात गायक पद्मभूषण अलंकरण सहित अनेकानेक सम्मानों से विभूषित आचार्य गोस्वामी गोकुलोत्सव जी महाराज का भव्य गायन सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में महाराज श्री को नाद योगी सम्मान समर्पित किया गया। इस अवसर पर महाराज श्री के साथ पंडित विजय शंकर मिश्र ने कई ज्वलंत मुद्दों पर खुलकर बात की। प्रस्तुत है उस वार्ता के कुछ महत्वपूर्ण अंश...

ईश्वर का वरदान है सुर

-पं. विजयशंकर मिश्र

गोस्वामी गोकुलोत्सव जी महाराज, अपनी तरह के एकमात्र संगीतज्ञ हैं। वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य महाराजश्री विश्वविख्यात गायक और संगीत संरचनाकार तथा लेखक हैं। दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित गोकुलोत्सव जी ने 'मधुर पिया' उपनाम से संस्कृत, ब्रजभाषा, हिन्दी, फारसी और उर्दू आदि भाषाओं में 5000 से अधिक गेय पदों की रचना की है। अद्भुत रंजनी, दिव्य गंधार, मधुर मल्हार, प्रसन्नपदा, नेहगन्धार एवं प्रभुप्रसन्ना जैसे मधुर रागों के सर्जक भी गोस्वामी जी ही हैं। एक्सगाइड के रूप में इन्होंने देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध कर रहे अब तक 72 शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया है। इन विश्वविद्यालयों में कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं- लीड्स, ऑक्सफोर्ड, लंदन यूनिवर्सिटी, ओहायो, बारक्ले, हार्वड यूनिवर्सिटी, अहिल्या तथा विक्रम विश्वविद्यालय आदि। महाराज जी एकमात्र ऐसे संगीतकार हैं जिनके जीवन काल में ही उन पर शोध कार्य हुआ है। डॉ. रजनी नागर को गोस्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य करने हेतु पीएचडी की उपाधि विक्रम विश्वविद्यालय ने प्रदान की है। 54 विदेश यात्राएं कर चुके आचार्यश्री को अब तक अमीर खां सम्मान, ग्लोरी ऑफ द नेशन (जर्मनी), श्रेष्ठ कला आचार्य, नाद ऋषि, विश्व भारती संगीत मार्त्तण्ड, गायनाचार्य एवं तान सम्राट जैसे कई मान-सम्मान मिल चुके हैं। फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, तेलगू, गुजराती, बंगला एवं संस्कृत आदि भाषाओं के विद्वान आचार्यश्री अब तक अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, केनेडा, स्पेन, आस्ट्रिया, स्वीट्जरलैंड, नीदरलैंड, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, बेल्जियम, हंगरी, पोलैंड, रूस, सिंगापुर, टोक्यो, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अफ्रीका, दुबई, मस्कट, बहरीन, आबूधाबी और मॉरिशस सहित कई देशों में अपनी प्रस्तुतियां दे चुके हैं। विगत 49 वर्षों से शास्त्रीय संगीत के मंचों पर सक्रिय महाराज जी से यह विशेष बातचीत पंडित विजयशंकर मिश्र ने की है-

यूं तो संगीत को शुरू से ही मोक्षमार्गीय माना गया है। किन्तु आप वल्लभ सम्प्रदाय में सांगीतिक महत्व के विषय में कुछ बताएं ?

वल्लभ सम्प्रदाय जिसे पुष्टिमार्गीय भी कहा जाता है, का संगीत के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। छन्द, प्रबन्ध, विष्णु पद, ध्रुवपद, नारद पद एवं रुद्र पद जैसे भक्ति पदों का गायन इस सम्प्रदाय में आरम्भिक चरण से ही होता रहा है। वर्तमान समय में भी जो संगीत सभ्यता बची है, और उसका जो जमीन कायम है यह नजीर भगवान की गुणानुवाद अर्थात् भक्ति पदों के कारण ही संभव हुआ है। एक समय ऐसा भी आया था जब राजे-रजवाड़े, बादशाह गायकों से अपनी झूठी प्रशंसाएं करवाते थे और उनके आश्रय में पल रहे कवियों, गायकों को यह करना पड़ता था क्योंकि राजा और बादशाह लोग शक्तिमान थे। किन्तु हमारी परम्परा में सिर्फ उसकी प्रशंसा हुई है, उसके पदों का गायन हुआ है जो पूरी दुनिया का बादशाह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। बाद में उन्हीं पदों को हमने ख्याल गायकी के साथ जोड़ा। जैसे नायकी कान्हड़ा में मेरे जिय